Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 2, July-2017, ISSN 2230-7540

# संगीत की दिनों-दिन बढ़ती उपयोगिता एवं उतर भारतीय संगीत में आने वाली समस्याएँ

**Reenu Sharma***

M. A. Music, (Net, UGC)

*शोध आलेख :– आज के इस वैज्ञानिक युग में अगर देखा जाए तो संगीत का क्षेत्र अछता नहीं रहा है। संगीत की महता बहुत ही बढती जा रही है। पहले समय में संगीत केवल घरानों में ही सीखा जता था अर्थात गुरू शिष्य परम्परा ही मान्य थी। उसके बाद संगीत में रूचि रखने वाले ग्रामोफोन, ट्रांजिस्टर, टी0वी0 आदि की सहायता से संगीत सीखते थे। परन्तु अज के इस वैज्ञानिक युग में संगीत विषय सभी विद्यालयों व विश्वविद्यालयें में आवश्यक विषय के रूप में शामिल हो गया है और यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि संगीत जैसा महान विषय विद्यार्थी को घर बैठे ही सिखने में मिल रहा है और यह उनका सौभाग्य माना जाता है।*

*मुख्य घटक :– भूमिका, संगीत की विशेषताएं, संगीत का प्रमुख तत्व मर्यादा और स्वतंत्रता, लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत, संगीत कलाओं में होने वाले परिवर्तन, उतर भारतीय संगीत में आने वाली समस्याएं ।*

----------X----------

## भूमिकाः–

संगीत प्रकृति की एक सर्वाधिक सुंदर रचना है। अनेक ग्रन्थों मे संगीत की उत्पति के सम्बन्ध में अलग–अलग धारणांए मानी जाती है। कुछ संगीतकार जल से संगीत की उत्पति मानते है तो कुछ पक्षियों से। ऐसा माना जाता है ब्रह्मा ने संगीत का निर्माण किया तथा उसे शिवजी को दिया। शिव से यह सरस्वती को मिला, सरस्वती से नारद को तथा नारद ने इसका प्रचार गांधर्वो, किन्नरों आदि में किया इस प्रकार संगीत प्रसारित होता गया।

पं0 दामोदर के अनुसार संगीत की उत्पति पक्षियों से हुई है। पं0 जी ने सात स्वरों की उत्पति इस प्रकार बताई है :–

मोर से सा, चातक से रे, बकरा से ग, कौआ से म, कोयल से प, मेढंक से ध, हाथी से नि स्वर उत्पन्न हुए है।

## परिभाषा :–

संगीत एक ऐसा माध्यम है जो मनुष्य को सांसारिक चिन्ताओं से मुक्त करवाकर आलौकिक सुख की प्राप्ति करवाने में सक्षम है। संगीत शब्द गीत शब्द में सम उपसर्ग लगाकर बना है। सम का अर्थ है अच्छा और गीत का तात्पर्य गायन से है। अर्थात् जो आलौकिक सुख की प्राप्ति करवाए वह भली भांति गाया हुआ 'गीत' संगीत है।

संगीत रत्नाकर में पं0 शारंगदेव जी संगीत की परिभाषा इस प्रकार देते हैः– गायन, वादन और नृत्य तीनों कलाओं का समावेश संगीत कहलाता है।

## 2) संगीत की विशेषताएंः–

ललित कलाओं में संगीत का प्रमुख स्थान है। वात्स्यायन के कामसूत्र में चौसठ कलाओं का वर्णन है। उनमें संगीत को प्रथम माना गया है। संगीत कला में केवल गायन ही नहीं आता, बल्कि वादनप और नृत्य का समावेश भी किया गया है। इस प्रकार शुरू से ही यह एक सामाजिक कला रही है, और समाज और कला में आए परिवर्तनों का असर इस कला पर भी होता रहा है।

हमारे यहां कला का आदर्श रहा है ' सत्यं शिवम सुन्दरम्' हृदय की सूक्ष्मतम भावनाओं की अभिव्यक्ति विभिन्न माध्यमों द्वारा की जाती है। नाद और लय द्वारा ऐसी अभिव्यक्ति ही संगीत है। मनुष्य–कंठ या किसी पदार्थ द्वारा उत्पन्न मधुर ध्वनि को नाद तथा समय की नियमित गति को लय कहते है। अन्य कलाओं की अपेक्षा संगीत का प्रभाव कला क्षेत्र में अत्यन्त व्यापक पाया जाता है।

## संगीत के प्रकार :–

संगीत दो प्रकार का माना जाता हैः–

**1. शास्त्रीय संगीत 2. लोक संगीत**

उच्चकोटि का सुविकसित शास्त्र सम्मत संगीत शास्त्रीय संगीत संगीत जिसे मार्गी संगीत भी कहा जाता है तथा विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित लोक संगीत अथवा लोकप्रिय गीत प्रकार जिसे 'देसी' संगीत भी कहते हैं दोनों ही संगीत को उच्च स्थान पर पहुंचाने में सहायक होते ळें

www.ignited.in

**1. शास्त्रीय संगीत :–**

जिस संगीत में गायन, वादन व नृत्य के कुछ निर्धारित नियम होते है और उनका पालन करना संगीतकार के लिए आवश्यक होता है उनका पालन करने से संगीत का रूप विकृत नहीं होता है अर्थात वह संगीत जिसमें कुछ निर्धारित नियमों का पालन किया जाता और उन बंधनों में ही कलाकार द्वारा कला का प्रदर्शन किया जाता है शास्त्री संगीत कहलाता है।

**2. लोक संगीत :–**

लोकसंगीत में शास्त्रीय संगीत की तरह कोई बंधन नहीं होता और नहीं कोई निर्धारित नियम होते है। लोक संगीत का उद्देश्य केवल मन को आनन्द प्रदान करना है। अर्थात आम

बोल–चाल की भाषा में प्रयोग किया जाने वाला संगीत लोक–संगीत कहलाता है।

**3. संगीत का प्रमुख तत्व :–**

**मर्यादा और स्वतन्त्रता:–**

हमारे संगीत का एक प्रमुख तत्व है– मर्यादा और स्वतन्त्रता। इन दो परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले तत्वों का सुन्दर समन्वय जहां कलाकार के लिए राग या निश्चित स्वरों का बंधन है वहां उन्हीं स्वरों में विभिन्न प्रकार के स्वर–संदर्भ, गमक, आलाप, तान, बोल लेकर सौन्दर्य निर्माण करने की अनुमति भी उसे प्राप्त है। इसी प्रकार ताल या निश्चित मात्राओं के बंधन में रहकर भी विभिन्न लयकारियों के उपयोग द्वारा पूर्ण संगीतकार विविधता तथा वैचित्रय उत्पन्न करता है।

रस की अनुभूति करवाना अर्थात मनोरंजन प्रदान करना संगीत का प्रमुख गुण माना जाता है। किन्तु मनोरंजन के साथ ही भाव–विशेष में तल्लीन कर देने की सरस एकाग्रता की सिद्धि भारतीय संगीत में ही संभव है।

लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत में भी संगीत बहुत से नियमों से बद्ध होने के बावजूद भी रंजकता ही अधिक प्रदान करता है। क्योकि शास्त्रीय संगीत में राग को नियमों के द्वारा ही गाया बजाया जाता है परन्तु फिर भी वह सुनने में बहुत अधिक मनभावन प्रतीत होता है। इसी प्रकार लोक संगीत में भी नियमों के ना होनें पर भी अलग–अलग प्रदेशो की मातृभाषा में लोक गीतों को इतने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया जाता है कि वह आनन्द विभोर कर देता है।

**4. संगीत कलाओ मे होने वाले परिवर्तन :–**

आधुनिक औद्योगि सभ्यता के प्रभाव स्वरूप हमारे जीवन में अनके परिवर्तन आए। कलाएं भी इससे अछुती नही रही। संगीत के निकटवर्ती कलाओं, उदाहरण के लिए चित्रकला या मूर्तिकला में फलस्वरूप परम्परा से हटकर भी अनेक परिवर्तन हुए है। अनेक विदेशी वाद्यों का प्रचलन हुआ। वाद्यों में विदेशी वाद वायलिन एक ऐसा वाद्य है कि जिस पर नाद के सूक्ष्मतम अवांतर भेद कुशलता से बजाए जा सकते है। इसी प्रकार गायन व नृत्य इन कलाओं में भी परिवर्तन हुआ। सामुदायिक रूप से शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करने की परम्परा हमारे यहां नही रही। उसका स्थान भी आज पाश्चात्य संगीत ने ले लिया है।

इसका एक प्रमुख कारण हमारे आज के युवाओं की पाश्चात्य संगीत की ओर बढती रूचि है। आज के युवा शास्त्रीय संगीत में अपना समय और मेहनत ना लगाकर बल्कि शोर–शराबे वाले संगीत को अधिक पसन्द करते है। पहले समय में संगीतकार अपने मनोभावों को शास्त्रीय संगीत के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। परन्तु आज युवा अपने भावों को उस शोर–शराबे में छुपाकर उसे अपना मंनोरजन कर लेते है।

**5. उतर भारतीय संगीत में आने वाली समस्यांए :–**

जब तक किसी कला की एक सुदृढ और सुव्यवस्थित पृष्ठ भूमि नहीं होती तब तक वह सुग्राहय नहीं हो पाती और उसका विकास भी समुचित रीति और तीव्र गति से नहीं हो पाता। मध्यकाल में विदेशी प्रभावों के फलस्वरूप कला का क्रियात्मक रूप परिवर्तित और विकसित हुआ, पर राज्य दरबारों में शास्त्र के प्रति रूचि न होने के कारण शास्त्र विकसित कला का साथ न दे सका। इसलिए शास्त्र व कला एक दूसरे से विलग हो गए। स्वामी हरिदास व तानसेन जैसे महान संगीतकारों का सप्तक क्या था, उनके स्वर क्या थे यह उल्लेख उनके समय में लिखे गए ग्रन्थों में भी नहीं मिलता क्योंकि सब संगीतकार पुरानी लीक, को ही पीटते रहते थे परिणाम यह हुआ कि धीरे–2 संगीत के क्षेत्र में एक दुर्व्यवस्था का जन्म हुआ जो बुरे हाथों में जाने से ओर अधिक बढ गई।

विष्णुदिगम्बर जी और भातखण्डे जी ने संगीत के क्षेत्र में बहुत योगदान दिया इसे ऊचांईयों तक ले जाने में इन दोनों ने संगीत का जगह–2 जाकर प्रचार व प्रसार किया इसे स्कूल व विश्वविद्यालयों में विषय के रूप में लागु करवाया, उसके फलस्वरूप आज संगीत के अनेक अंगों में जो अव्यवस्था शेष रह गई है उसकी ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए ''भारतीय संगीत में स्थिरीकरण'' नामक एक आन्दोलन चलाना होगा। इसका तात्पर्य यह है कि संगीत के विविध अंगों के विषय में जो भ्रम फैला हैं, संदेह है अथवा मतभेद हैं उसे दूर करके एक निश्चित मत स्थिर किया जाए। क्योकि किसी एक विषय पर बहुत अधिक मतभेदों का होना ही सबसे बडी समस्या है। कई संगीतज्ञ तो इसलिए अपना अलग मत बना लेते है क्योकि किसी दूसरे घराने के मत को मानना वे अपना अपमान समझते है जो कि विद्यार्थियों के लिए सबसे बडी समस्या का कारण बनता है।

**निष्कर्ष:–**

इस प्रकार निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि भारत में संगीत की उपयोगिता बढती जा रही है आज हर क्षेत्र में चाहे मनोरंजन के रूप में हो या चिकित्सा के रूप में संगीत की उपयोगिता हर क्षेत्र में है।

यह भी सत्य है संगीत के क्षेत्र में बहुत सी समस्याएं है परन्तु संगीतज्ञों के प्रयास से इन समस्याओं के समाधान का भी प्रयत्न किया जा रहा है। इस प्रकार संगीत की उपयोगिता

दिनों–दिन बढती जा रही है।

**सन्दर्भ सूचि :–**

संगीत – कला का प्रतिनिधि मासिक वर्ष –43 अंक, 12 दिसम्बर 1977

www.ignited.in

संगीत मासिक पत्रिका दिसम्बर 1959

संगीत मैन्युअल

संगीत शिक्षा – आरती पब्लिकेशन्स

**Corresponding Author**

**Reenu Sharma***

M. A. Music, (Net, UGC)

**E-Mail – arora.kips@gmail.com**